फूल - आओ, आओ

----- लीना मेहेंदले

बचपन में हम एक खेल खेलते थे- फूल आओ आओ । बड़ा मजेदार खेल था और इसकी कई विशेषताएँ थी ।

खेल कुछ यों था -- चाहे जितने बच्चे हों, जिस उमर के हों, सब को दो दलों में बाँट लो । हर दल का एक राजा हो । यह राजा ही अपने दल की रणनीति को निर्धारित करेगा ।

मैदान में करीब पचास से सौ मीटर की दूरी पर दो बड़ी लकीरें खींच कर एक-एक लकीर पर एक एक दल के सदस्यों को बैठा दिया जाता था । खेल यही था कि हर सदस्य को छलांगे लगाते हुए दूसरे दल की लकीर तक पहुँचना है, और जिस दल के सभी सदस्य दूसरे पाले में पिल जायेंगे, वही दल जीतेगा।

छलाँग कौन लगा सकता है और कैसे? असल खेल यही था । हरेक दल का राजा अपने सदस्यों को एक एक फूल का नाम दे देता था - जैसे गुलाब, कमल, गेंदा, जूही, चमेली इत्यादि। ये नाम दूसरे दल के सदस्यों को नही बताये जाते थे । अब मान लो पहले दल को खेल आरंभ करना है और मैं राजा हूँ तो मैं अपना एक खिलाड़ी चुन कर दूसरे राजा को बताऊँगी । वह आकर मेरे खिलाड़ी की आँखें बंद करेगा और अपने दल सदस्यों से कहेगा - "चमेली के फूल आओ, आओ ! हल्की सी चपत मार कर जाओ ।"

इस पर दूसरे दल में जिसे चमेली फूल का नाम दिया है वह आकर मेरे खिलाड़ी को चपत मारेगा और वापस अपनी जगह पर बैठ जायेगा । अब मेरे खिलाड़ी को पहचानना है कि उसे चपत किसने मारी - अर्थात् दूसरे दल में चमेली का फूल कौन था ? यदि वह पहचान पाया तो उसे एक छलांग लगा कर अपनी लकीर से आगे आ जाना है । इस प्रकार मेरा एक खिलाड़ी आगे बढ़ गया । साथ ही मेरे दल में सबको समझ में आ गया कि दूसरे दल में चमेली का फूल कौन है ।

पारी अब भी मेरी है इसलिये अब मैं किसी दूसरे खिलाड़ी का चुनाव करूँगी । दूसरे दल का राजा उसकी आँखें बंद करेगा और कहेगा- गेंदे के फूल आओ आओ, हल्की सी चपत मार कर जाओ .....। इस प्रकार खेल आगे चलेगा । यदि मेरा खिलाड़ी पहचानने से चूक गया कि उसे किसने चपत मारी तो पारी मेरे हाथ से निकल कर दूसरे राजा के हाथ चली जायगी । इस प्रकार उसके खिलाड़ियों को आगे आने का मौका मिलेगा ।

खेल कितनी देर चलेगा? जितने अधिक खिलाड़ी होंगे और पाले की दो लकीरें जितनी दूर होंगी - उसी हिसाब से खेल जल्दी या देर से खत्म होगा । मुझे याद है कि कभी कभी हम तीन चार घंटे यही खेल खेलते थे और पूरी शाम निकल जाती ।

इस खेल मैं में अक्सर राजा की भूमिका निभाती थी और मेरा दल हमेशा जीतता था । इसकी एक खास वजह थी । मैं हमेशा अपने दल के छोटे खिलाड़ियों को अधिक मौका देती और पहले उन्हीं को आगे ले जाने की नीति अपनाती थी ।

दूसरे दल के राजा लोग अक्सर इससे उल्टा पहले अपने बड़े खिलाड़ियों को आगे आने का मौका देते जो लम्बी लम्बी छलांगों में बड़ी बड़ी दूरियाँ पार करते थे । इसलिये खेल की शुरूआत में चित्र यही दीखता था कि मेरे दल के कई छोटे सदस्य थोड़ा थोड़ा अंतर काट कर अब भी मेरे पाले के आसपास ही हैं जबकि दूसरे दल के बड़े सदस्य अपनी लकीर से काफी आगे निकल आये हैं ।

लेकिन आधा खेल बीतते-बीतते बाजी उलट जाती थी । मेरे छोटे खिलाड़ी दूसरी लकीर के पास पँहुचे होते थे और बड़े खिलाड़ियों को पार कराने के लिये मुझे कम मौकों की जरूरत होती थी जबकि दूसरे दल के बड़े खिलाड़ी तो मेरी लकीर को पार कर खेल से बाहर निकल चुके होते थे लेकिन छोटे सदस्य काफी पीछे रह जाते जिन्हें जल्दी जल्दी आगे लाना संभव नही था । साथ ही दूसरे दल के जो सदस्य लकीर पार कर जाते उन्हें चपत मारने के लिये नही बुलाया जा सकता था । सो बाकी खिलाड़ियों के नाम याद रखना और भी आसान हो जाता था ।

इस खेल से मैनें एक बात सीखी - यदि हम एक एक खिलाड़ी की बात करते हैं तो किसी भी समय देखा जा सकता था कि दूसरे दल के ज्यादा सदस्य हमारी लकीर पार कर चुके हैं ।
लेकिन जब समूचे दल के जीतने की बात आती थी तब मेरा ही दल जीतता जिसमें छोटों को पहले मौका देकर आगे निकलवाया जाता था ।

आज जब मैं आरक्षण के नाम पर चलने वाली चर्चा को सुनती हूँ तो मुझे यह खेल याद आता है । हमें तय करना होगा कि एक देश की तथा एक समाज की हैसियत से हम एक साथ आगे आना चाहते हैं या नही? यदि हमें अपने देश को दूसरे देशों की तुलना में आगे लाना है तो
अपने देश के उन सभी नागरिकों का विचार अवश्य करना होगा जो किसी भी कारण से पिछड़ रहे हैं - चाहे वह सामाजिक कारण हो, आर्थिक गरीबी का कारण हो, स्त्री-पुरूष भेद का कारण हो, धर्म या जात पात का कारण हो, आदिवासी होने का कारण हो या शहरी-गँवई भेद का कारण हो। पूरे समाज के पिछड़ेपन को मिटाकर सबको आगे ले जाने की नीति बनानेवाला देश ही दूसरे देशों के मुकाबले आगे निकलेगा । अन्यथा विश्व आबादी का छठवाँ हिस्सा अपने पास होते हुए भी हम पिछड़े ही रह जायेंगे।

ई/18, बापू धाम, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली